करौली रियासत के प्रशासन पर ब्रिटिश प्रभाव

(1818–1950 ई.)

BRITISH IMPACT ON THE ADMINISTRATION OF KARAULI STATE

(1818-1950AD)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ,अजमेर

को पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप, 2012

समाजिक विज्ञान(इतिहास) संकाय

शोध निर्देशक,

डॉ. लता अग्रवाल,

व्याख्याता,इतिहास विभाग,

राजकीय महाविद्यालय,अजमेर

शोधार्थी,

नरेन्द्रसिंहगुर्जर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ,अजमेर

करौली रियासत के प्रशासन पर ब्रिटिश प्रभाव

(1818–1950 ई.)

BRITISH IMPACT ON THE ADMINISTRATION OF KARAULI STATE (1818-1950AD)

IMPORTANCE OF PROPOSED INVESTIGATION

प्रस्तावित शोध का महत्त्व :

करौली या कल्याणपुरी राजपूताने की एक प्राचीन रियासत थी,जिसकी स्थापना 1348ई. में महाराजा अर्जुनदेव ने की थी।राजस्थान के पूर्वी भाग में चम्बल नदी के बीहड़ कन्दराओं तथा अरावली पर्वत के पूर्वी ढ़ाल पर स्थित है जो डांग क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। इस रियासत की सीमाऐं भरतपुर,धौलपुर व जयपुर रियासत तथा मालवा राज्य से लगी हुई थी।यहाँ के खानपान, वेशभूषा,सभ्यता–संस्कृति व भाषा पर ब्रज संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता था।यहाँ का शासक वर्ग यादव राजपूत चन्द्रवंशी(यदुवंशी) था, जो अपने को कृष्ण के वंशज मानते थे,जिनका प्रारम्भिक विकास मथुरा से माना जाता है। मुगल काल में गोपालदास यहाँ के महाराजा मुगल सम्राट अकबर के समकालीन थे, जिन्होने सम्राट अकबर से मित्रता स्थापित कर उसके कई सामरिक अभियानों विशेषकर दौलताबाद विजय में सैन्य सहायता देकर मुख्य भूमिका निभाई,जिससे प्रसन्न होकर सम्राट अकबर ने इन्हें देवबहादुर की उपाधि व 2000 का मनसब प्रदान कर सम्मानित किया।महाराजा गोपालदास(1549–1589ई.) ने बपने हाथों से यमुना नदी के किनारें आगरा के प्रसिद्ध लाल किले की नींव रखी। मराठा युग में महाराजा गोपाल सिंह द्वितीय(1734–1757ई.) यहाँ के प्रसिद्ध शासक हुए,जिन्होने 17 जुलाई,1734 ई. के हुरड़ा सम्मेलन में उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी निभाते हुए राजपूतों को अपनी एकता व संगठन के लिये प्रेरित किया। देश,काल और परिस्थितियों के अनुरूप इन्होंने मराठों से संधि कर अपने राज्य को सुरक्षा प्रदान

की।ब्रिटिश काल में लॉर्ड हेस्टिंग्ज के आदेश पर चार्ल्स मेटकॉफ से करौली रियासत के महाराजा हरवक्सपाल(1804—1838ई.) ने नवम्बर,1817 ई. में अंग्रेजों से मित्रता एवं सहयोग की संधि करने वाले राजपूताना के प्रथम शासक थे। अंग्रेजो से संरक्षण प्राप्त कर करौली के महाराजा मदनपाल (1854—1869 ई.) ने अंग्रेजों के साथ समन्यवादी व मित्रतावादी नीति अपनाते हुए करौली राज्य द्वारा 1857 ई. की क्रान्ति में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सहयोग देने से 1नवम्बर,1858 ई. को ब्रिटिश साम्राज्ञी की घोषणा के अन्तर्गत भारतीय रियासतों को ब्रिटिश संरक्षण देकर उनसे मित्रता स्थापित कर सहयोग प्राप्त कर भारत में ब्रिटिश सत्ता को सुदृढ़ व आर्थिक दृष्टि से समृद्ध किया।रियासतों के शासक ब्रिटिश सरकार के सुदृढ़ स्तम्भ बने।करौली रियासत में ब्रिटिश ताज ने अपने हितों के अनुरूप प्रशासनिक,न्याय,पुलिस व चिकित्सा व्यवस्था,अंग्रती शिक्षा का विकास,यातायात के साधन व सुरक्षित व्यापारिक मार्ग,जल संसाधनोंका विकास,डाक—तार एवं संचार व्यवस्था,व्यापार—वाणिज्य,राजस्व व्यवस्था की स्थापना के साथ— साथ आधुनिक व प्रशिक्षित हथियारबंद सैनिकों की बटालियन का गठन कर ब्रिटिश सत्ता को संरक्षण प्रदान किया।महाराजा अर्जुनपाल(1875—1886ई.),भंवरपालसिंह(1886—1927ई.),भीमपाल सिंह(1927—1942ई.)तथा गणेशपाल सिंह(1942—1956ई.) सभी ने ब्रिटिश ताज के प्रशासन के प्रति निष्ठा व्यक्त कर सहयोग दिया।इस प्रकार करौली रियासत के प्रशासनिक व अर्थ व्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता गया।फलतः रियासत के प्रत्येक क्रियाकलापों में ब्रिटिश अधिकारियों का हस्तक्षेप व नियंत्रण बना रहा।

बीसवीं शताब्दी के गांधीजी के असहयोग आन्दोलन के बाद करौली रियासत की प्रजा ने रचनात्मक कार्यो के द्वारा बेगार प्रथा समाप्त करने की मांग की साथ ही विदेशी शिक्षा का बहिष्कार, हिन्दी भाषा का शासकीय कार्यो में प्रयोग,खादी का प्रयोग,हरिजनोंद्धार, नगरपालिका का विकास तथा रियासत में उत्तरदायी शासन लागू करने आदि की प्राप्ति हेतु संगठित होकर ब्रिटिश नौकरशाही की शोषणात्मक नीतियों के विरूद्ध

जन आन्दोलन को प्रेरित किया।स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रेरित करौली रियासत के स्थानीय नेताओं में पूर्णसिंह,भंवरलाल,कवि चिरंजीलाल शर्मा,कल्याणदास गुप्ता,मुंशी त्रिलोकचन्द माथुर, औंकार सिंह,मदनसिंह व रामगोपाल आदि ने रियासत की दमनकारी नीतियों के विरूद्ध जन संगठन को उत्प्रेरित किया। ब्रिटिश अधिकारियों के कहने पर महाराजा ने नृशंसता से इनका दमन किया। 1938 ई. में मुंशी त्रिलोकचंद माथुर द्वारा प्रारम्भ करौली रियासत में प्रजामण्डल के अधिवेशनों द्वारा बेगार उन्मूलन,बंजर भूमि पर लगान माफी,सामाजिक न्याय तथा स्थानीय स्वशासन स्थापित करने की मांग के कारण कार्यकर्त्ताओं को जेल व शारीरिक यातनाऐं झेलनी पड़ी। 1942ई. के भारत छोड़ों आन्दोलन के दौरान करौली रियासत में भी प्रदर्शन,भाषण,सभाएं,जुलूस,विदेशी कानून व वस्त्रों का बहिष्कार तथा धरना आदि के द्वारा जन–आन्दोलन को जारी रखा। नवम्बर,1946 में राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं ने महाराजा से उत्तरदायी शासन स्थापित करने की मांग की।इस प्रकार करौली रियासत में गांधी समर्थक दल का आन्दोलन ब्रिटिश सरकार की जन विरोधी नीतियों व महाराजा की निरंकुश सत्ता के विरूद्ध एक सामूहिक संघर्ष था।जो ब्रिटिश प्रशासन द्वारा नियन्त्रित शासन सत्ता व राजनीतिक गतिविधियों के विरूद्ध उदासीन प्रजा,जागीरदार,शिक्षक,नौकरी पेशा मध्यम वर्ग,समाज सेवी,लेखक,कवि,व्यापारी,सेठ–साहूकार,पत्रकार आदि को प्रेरित कर शासको के अत्याचार,शोषण व भेदभाव की नीति के विरूद्ध संगठित करने में सशक्त सिद्ध हुआ।

करौली रियासत के प्रशासन पर बढ़ते ब्रिटिश प्रभाव व निरंकुश सत्ता के विरूद्ध किये गये आन्दोलन व संघर्ष की महत्ता को शोध द्वारा प्रतिपादित करना है।

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
MDSU, Ajmer

OBJECTIVE OF RESEARCH

शोध के उद्देश्य :

मेरे शोध विषय : ''करौली रियासत के प्रशासन पर ब्रिटिश प्रभाव (1818-1950 ई.)'' में निम्न उद्श्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययन किया जाने का प्रयास रहेगा।

1. प्राथमिक व द्वैत्यिक समसामयिक प्रकाशित व अप्राकाशित स्त्रोंतों का संकलन कर उपलब्ध सामग्री द्वारा इतिहास परक शोध अध्ययन करना है।

2. शोध विषय करौली रियासत के प्रशासन पर ब्रिटिश प्रभाव की प्रकृति व क्षेत्र के अनुरूप तथ्यात्मक शोध अध्ययन करने का प्रयास रहेगा।

3. ब्रिटिश अधिकारियों व करौली के शासकों की प्रशासकीय नीतियों के विस्तार व प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. करौली रियासत के आधुनिकीकरण में ब्रिटिश अधिकारियों व शासको के छद्म आवरण को नवीन तथ्यों द्वारा अनावृत कर सही तथ्य को प्रस्तुत करना मेरा उद्देश्य रहेगा।

5. शोध अध्ययन के समय विषय की वास्तविकता व मौलिकता पर ध्यान दिया जायेगा।

6. करौली रियासत के प्रशासन पर ब्रिटिश प्रभाव से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाओं ग्रन्थ सूचियों मे प्रकाशित समीक्षाओं का सर्वेक्षण कर ब्रिटिश नीतियों, कृषको के प्रति अपनाई गई शोषणात्मक नीतियों, आधुनिक शिक्षा के विकास, सामाजिक परिवर्तन व उत्तरदायी शासन की

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
MDSU Ajmer

मांग हेतु संगठित आन्दोलन के प्रभाव को विश्लेषणात्मक पद्धति से प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा।

7. करौली रियासत के प्रशासन में ब्रिटिश अधिकारियो की शोषणात्मक नीतियों के विरूद्ध सशक्त प्रजामण्डल आन्दोलन के कारणों व परिणामों का तथ्यपरक मूल्यांकन करना है।

8. करौली रियासत में ब्रिटिश प्रशासन की स्वार्थपूर्ण नीतियों के विरूद्ध जन आन्दोलन की महत्ता व उसकी सफलता के कारणों का अध्ययन करना है।

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
MDSU, Ajmer

REVIEW OF LITERATURE

पुनरावलोकन :

1. गुप्ता, हरिचरण; ''करौली राजपूताने का इतिहास'', करौली 2003 ई.

यह ग्रन्थ ऐतिहासिक लेखन पद्धति के अनुरूप न होकर विवरणात्मक अधिक है। इसमें शासको के चरित्र चित्रण को महत्व दिया गया है। ऐतिहासिक तथ्यो–घटनाओं के संबंधो का अभाव है। समसामयिक तथ्यों, आंकड़ो, समय और परिस्थिति को दर्शाने व तथ्यात्मक व शोधपरक परिणाम प्रस्तुत करने में असमर्थ प्रतीत होते है। शासको व ब्रिटिश अधिकारियों के सम्बन्धों के कारणों व प्रभावों का अभाव है।

2. गर्ग, दामोदर लाल; ''करौली राज्य का इतिहास'', जयपुर 2009ई.

इस पुस्तक में शासक के व्यक्तित्व व आचरण को प्रशंसात्मक तरीके से बढ़ा–चढा कर प्रस्तुत किया गया है। ब्रिटिश नौकरशाही की शोषणात्मक नीतियों का नितान्त अभाव है। जबकि, मेरा शोध विषय ब्रिटिश प्रशासन का दमनात्मक तथा शोषणात्मक राजनीतिक तथा आर्थिक नीतियों, सामाजिक व शैक्षिक अन्याय के विरुद्ध संगठित जनता के बहुआयामी आन्दोलन का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में इतिहास परक मौलिक स्त्रोंतो के आधार पर अध्ययन कर प्रस्तुत करना है।

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
M.D.S.U. Ajmer

RESEARCH GAPS (BASED ON REWIEW)

शोध अन्तराल (पुनरावलोकन पर आधारित) :

पूर्व में किया गया ऐसा कोई शोध कार्य प्राप्य नही है जो मेरे शोध विषय से सम्बन्धित हो। एचीसन, कर्नल टॉड, दशरथ शर्मा, गौरी शंकर, हीराचन्द ओझा, गोपीनाथ शर्मा तथा रामप्रसाद व्यास आदि इतिहासकारों ने समग्र राजस्थान का तथ्यपरक इतिहास लिखने का श्रम अवश्य किया परन्तु उनके ग्रन्थो में करौली रियासत के प्रशासन पर ब्रिटिश प्रभाव के विरूद्ध संगठित व उत्प्रेरित सशक्त जन आन्दोलन का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन परक स्पष्ट व पूर्ण इतिहास लेखन की जानकारी प्राप्त नही होती है। इसके पश्चात मुझे कोई शोध परक ऐतिहासिक प्रमाणों पर आधारित ग्रन्थ उपलब्ध नही हो पाया। मेरा शोध विषय शोध अध्ययन से प्रामाणिक तथ्यपरक नवीन खोज व तथ्यों को अनावृत करने मे अवश्य सार्थक होगा ऐसा मेरा शोध कार्य प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा।

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
M.D.S.U. Ajmer

MAJOR HYPOTHESIS OF RESEARCH WORK

शोध की परिकल्पना :

करौली रियासत के शासक प्रारम्भ से ही राज्य की शांति व सुरक्षा के प्रति सजग प्रतीत होते रहें। मुगलों मराठों और ब्रिटिश नौकरशाही के प्रति भी संधि व समर्पण की नीति का अवलम्बन किया। परन्तु करौली के शासको ने ब्रिटिश अधिकारियों की दमनात्मक व शोषणात्मक नीति के समक्ष समर्पण कर करौली राज्य को आन्तरिक प्रशासनिक हस्तक्षेप की ओर प्रवृत किया। आधुनिकीकरण के नाम से सामाजिक, सांस्कृतिक शैक्षिक गतिशीलता के मार्ग को अवरुद्ध किया और अपनी पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने की भावना को बलवती किया।

मेरे शोध विषय की यही परिकल्पना रहेगी कि शासक व ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारियों की प्रशासन में हस्तक्षेप और दमनात्मक, साम्राज्यवादी,शोषणात्मक, सामाजिक अन्याय व आर्थिक स्वार्थपूर्ण नीति ने करौली रियासत को आर्थिक क्षति पहुँचायी, जातिगत व्यवस्था को प्रशासनिक छिन्न-भिन्न किया, परम्परागत उद्योगो व शिक्षा को पतनोन्मुख किया तथा प्रजा की भौतिक उन्नति के लिए कोई प्रयास नही कियें। शासक तथा ब्रिटिश नीतियों ने ही जन आन्दोलन को संगठित करने के लिए प्रेरित किया जो एक सशक्त आन्दोलन के रुप में जनता की सहभागिता के रूप में सफल हुआ। मेरा शोध विषय नवीन आयामों को स्थापित करेगा। इस ब्रिटिश प्रशासनिक प्रभाव के विरुद्ध संगठित जन आन्दोलन में बुद्धिजीवी मध्यम वर्ग ने उत्तरदायी शासन की मांग कर स्वयम् को राष्ट्रीय जन आन्दोलन की मुख्यधारा में सम्मिलित कर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी भूमिका निभाई। मार्च, 1948 में मत्स्य संघ का निर्माण कर राजस्थान के एकीकरण की नींव रखी। शोध विषय की परिकल्पना को ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर शोध पद्धतियों के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयास है।

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar

RESEARCH METHODOLOGY

शोध प्रविधि :

शोध विषय को क्रमबद्ध व व्यवस्थित करने तथा प्रामाणिकता, वस्तुनिष्ठता पारदर्शिता लाने हेतु नवीन तथ्यों का संकलन कर पूर्व ज्ञात तथ्यों की नवीन व्याख्या द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा। संकलित तथ्यपरक सामग्री की समीक्षा करने का प्रयास किया जायेगा। संकलित तथ्यपरक सामग्री की समीक्षा व्याख्या व तुलनात्मक परीक्षण द्वारा नवीन तथ्यों को स्थापित कर ऐतिहासिक मूल्यों की उपयोगिता अनुपयोगिता का ध्यान रखकर वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर नये विचारों व आयामों को अवधारित किया जा सकेगा। शासक व ब्रिटिश नौकरशाही की नीतियों के मूल प्राथमिक संकलित तथ्यों का तथ्यात्मक विश्लेषण कर ऐतिहासिक परिदृश्य प्रविधि के समरूप प्रस्तुत पारदर्शित व सत्य इतिहास लेखन लिखने का प्रयास किया जायेगा। ज्ञान संश्लेषण शोध प्रविधि के अन्तर्गत कुछ निश्चित नियमों तथा सिद्धान्तो की व्याख्या प्राप्त तथ्यों तथा आंकडों के आधार पर तथा शोध प्रविधि में आलोचनात्मक-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के साथ संकलित तथ्यों का अवलोकन व निष्पक्ष व्याख्या परक शोध कार्य करने का प्रयास रहेगा। जिससे सही निष्कर्षो के साथ घटनाओं तथा क्रियाकलापों का तर्कसंगत मूल्यांकन, निरीक्षण व संश्लेषण किया जाना साक्षात्कार व सर्वेक्षण विधि का भी प्रयोग कर तथ्यपरक प्रामाणिक तथा वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन सम्भव हो सकेगा।

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
M.D.S.U. Ajmer

CHAPTERISATION

अध्याय योजना

1.करौली रियासत की भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2. करौली रियासत में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रशासनिक हस्तक्षेप और प्रभाव(1818–1858ई.)

3. करौली रियासत में 1858 ई. के बाद ब्रिटिश राज की औपनिवेशिक नीति और प्रभाव

4. ब्रिटिशकालीन करौली रियासत का परम्परागत समाजिक संगठन में परिवर्तन और प्रभाव

5.करौली रियासत की स्थापत्य कला–संस्कृति

6. करौली रियासत में गांधी व प्रजामण्डल आन्दोलन और राजस्थान में विलय

निष्कर्ष

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
M.D.S.U. Ajmer

LIST OF REFERENCE CITED :

शोध विषय मे उल्लेखित व करौली रियासत 1818 से 1950 ई0 के मध्य प्रकाशित व अप्राकशित ग्रन्थों का अध्ययन किया जायेगा –

राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

(करौली रियासत की ब्रिटिश सम्बन्ध से सम्बन्धित फाईल्स,1800–1950 ई.)

फोरन एण्ड पोलिटिकल कन्सलटेशन एवम् प्रोसीडिंग, 1800–1920 ई0

सीक्रेट फाईल्स, (1800–1947ई0)

राजपूताना एजेन्सी रिकार्डस – (1800–1948 ई0)

ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित कानून व अध्यादेश

करौली रियासत से सम्बन्धित बहियाँ, पत्रावलियाँ, पटटे खाता महाजनों की बहियाँ, पोर्टफोलियों फाईल्स, एजेन्सी फाइल्स, एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल कमिनर रिकार्ड्स, करौली शासको के अन्य रियासतो के शासको से सम्बन्धित पत्र सेटलमेंट रिकार्ड्स, रेवेन्यू फाइल्स, टेक्स इम्पोज्ड फाइल्स आदि।

एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट्स जनगणना रिपोर्ट्स; वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा रिपोर्ट्स; करौली रियासत की उत्तराधिकार सम्बन्धित दस्तावेज; गजेटियर ऑफ करौली स्टेट आदि। करौली रियासत की विलेख डायरी, 1925 ई.; प्रजामण्डल की फाईल्स, 1940–49 ई.; जेल रजिस्ट्रर सेन्ट्रल जेल करौली, 1931–1948 ई0; कुंवर मदनसिंह कृंत गोपाल यश वणीनम; संगठनात्मक समसरूओं की फाइल्स, 1920–1948 ई.; राजपूताना गजेटियर ऑफ करौली स्टेट, 1909 ई.; शिक्षा सम्बन्धित रिकार्ड्स, 1870–1950 ई.; करौली राज्य सेवक संघ की फाईल्स (1938–1950 ई.)

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar

पत्र-पत्रिकाएं :

राजपूताना-मालवा टाईम्स,1885ई.; मानस-1908ई.; तरुण राजस्थान, 1924-1926 ई.; त्याग भूमि, 1927 ई.; धर्म वृतान्त, 1932-33 ई.; राजस्थान 1894-1902 ई. तथा 1925-1927 ई.; यंग राजस्थान 1929 ई.; सन्‌लाइट (अंग्रेजी भाषा), 1930-34 ई.; अखबार, 1940-41 ई.; दिशा करौली, 1929 ई.; राजस्थान समाचार, 1889 ई.

प्रकाशित ग्रन्थ -

हुसैन, अल्ताफ - ''राजपूताने का भूगोल'', जयपुर, 1961

कर्नल टाड - ''एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटिज ऑफ राजस्थान'', नवीन संस्करण, दिल्ली, 1970

शर्मा, गोपीनाथ - ''राजस्थान का इतिहास'', जयपुर, 1972
''सोशल लाईफ इन मेडीवल राजस्थान'', जयपुर, 1992

शर्मा, दशरथ - ''राजस्थान थ्रू द एजेज'', बीकानेर, 1935

शर्मा, मथुरालाल - ''कोटा राज्य का इतिहास'', कोटा, 1939

ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द - (1) ''राजपूताने का इतिहास'',अजमेर,1941
(2) ''बीकानेर राज्य का इतिहास'', अजमेर, 1940

जैन, एम.एस. - ''राजस्थान का इतिहास'', जयपुर, 1988

व्यास, रामप्रसाद - ''आधुनिक राजस्थान का वृहत्त इतिहास'', जयपुर, 2010 (तृतीय संस्करण)

केला, भगवानदास - ''देशी रियासतों में जन जाग्रति'', इलाहबाद, 1948

मेहता, पृथ्वीसिंह - ''हमारा राजस्थान'', इलाहबाद, 1950

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar.

श्यामलदास	– ''वीर विनोद'', दिल्ली, 1984
देव, नृसिंह	– ''राजस्थान की पुकार'', अजमेर, 1928
नरुल्ला एण्ड नाइक	– ''हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया'', दिल्ली, 1965 ई.
सहाय, ज्वाला	– ''लायल राजपूताना'', आगरा, 1874 ई.
बनर्जी, एस.	– ''एजूकेशन इन राजपूताना'', कलकत्ता, 1991
अग्रवाल, राधामोहन	– ''राजपूताना'', दिल्ली, 1954
जावलिया, बी.एस.	– "Socio-Economic Condition in Rajasthan", Jodhpur, 2002
गर्ग, राधामोहन	– "Mewar & British, Udaipur", 2004
गोयल, एस.	– ''अजमेर में जन आन्दोलन'', अजमेर, 2000
पारीक, वीरेन्द्र	– ''राजपूताना की संस्कृति'', जोपुर 1979
गोयल, सर्वेश	– ''राजस्थान का इतिहास'', जयपुर, 1964

Narendra Singh Gurjar
Research Scholar
MDSU. Ajmer